Psychology MJC+MIC -3 Semester- 3

साथी समूह

Peers

बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक साथी समूह बनते हैं।

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक P.D. कॉलेज

POSTER MAKER Poster Maker

4.3. साथी–समूह (PEERS)

4.3.1. परिचय (Introduction)

एक साथी–समूह या सहकर्मी समूह वह समूह होता है जो ऐसे लोगों से बना होता है जिनकी आयु तथा सामाजिक स्थिति लगभग समान होती हैं साथ ही जिनकी रुचियाँ भी समान होती हैं। विकास की प्रत्येक अवस्था में बालक को अपने साथी–समूह की

आवश्यकता होती है। प्रायः बालक अपने आयु स्तर के अनुसार ही अपने साथी (मित्र) बनाता है। **उदाहरण के लिए,** बचपनावस्था में बालक अपनी ही आयु के बालकों के साथ खेलना पसन्द करता है न कि किसी बड़े बालक के साथ। प्रत्येक अवस्था में मित्रों (साथियों) की संख्या भी भिन्न–भिन्न होती है। ये समूह "माध्यमिक या द्वितीयक समाजीकरण" के एजेंट होते हैं जो जीवन भर चलते है तथा बच्चों को सामाजिक रूप से आयु–सहकर्मियों के साथ स्वीकार्य तरीके से व्यवहार करने के लिए सीखने में सहायता करते हैं। अपनी आयु के अनुसार बच्चे उचित सामाजिक दृष्टिकोण सीखते हैं।

सहकर्मी समूह की कुछ सामान्य विशेषताओं में शामिल हैं–

1) यह समूह आयु (विकास और परिपक्वता की समान अवस्था) या लिंग आदि के आधार पर बनते हैं। इसमें खेलने वाले साथी, परिवार के सदस्य, पड़ोसी या डे केयर सेंटर/स्कूलों में साथी शामिल होते हैं।
2) इन समूहों में साथियों के हित तथा सामाजिक स्थिति भी समान हो सकती हैं और करीबी सामाजिक निकटता रख सकते हैं।
3) युवा किशोरों के लिए, साथियों द्वारा स्वीकृति समाजीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। इसलिए वे सहकर्मी समूह के अनुरूप होने और वफादारी को बढ़ावा देने की इच्छा प्रदर्शित करते हैं।

साथी समूह का समाजीकरण शुरुआती वर्षों में शुरू होता है, जैसे– जब खेल के मैदान पर बच्चे छोटे बच्चों को बारी–बारी से खेलने के नियम, खेल के नियम या टोकरी को कैसे चलाना है, सिखाते हैं। जैसे–जैसे बच्चे किशोरावस्था में बढ़ते हैं, यह प्रक्रिया जारी रहती है। किशोरों के लिए सहकर्मी समूह एक नए तरीके से महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे अपने माता–पिता से अलग पहचान विकसित करना शुरू करते हैं और स्वतंत्रता का आनन्द लेते हैं। इसके अलावा, साथी समूह समाजीकरण के लिए अपने स्वयं के अवसर प्रदान करते हैं क्योंकि बच्चे आमतौर पर अपने परिवार की तुलना में अपने साथियों के साथ विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न होते हैं।

साथी समूह किशोरों को उनके परिवार के दायरे से बाहर पहला प्रमुख समाजीकरण अनुभव प्रदान करते हैं। सहकर्मी समूह के प्रभाव का पता उस समय से लगाया जा सकता है जब बच्चा तीन वर्ष का होता है, जब वह निकटतम परिवार के बाहर के लोगों के साथ मिलना–जुलना आरम्भ कर देता है। इतनी कम आयु से ही, बच्चे अपने साथियों के साथ सार्थक संबंध बनाते हैं, जो उन पर प्रभाव डालते हैं। चूँकि वे अधिकतर एक ही आयु वर्ग के होते हैं, वे बिना किसी रोक–टोक के स्वतंत्र रूप से बातचीत करते हैं। सहकर्मी समूह के साथ इस प्रकार का निरंतर और अनियंत्रित समाजीकरण, एक बालक को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सीख प्राप्त करने में सहायता करता है।